प्रमाण-पत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, श्री बारदेसकर एफ. एफ. ने 'इलाचन्द्र जोशी जी के उपन्यासों में पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन' यह लघु-शोध-प्रबंध एम. फिल. उपाधि के लिए मेरे निर्देशन में लिखा हैं। यह उनकी मौलिक रचना हैं। यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण योजना के अनुसार लिखा गया हैं। इस में जो तथ्य प्रस्तुत किऐ गए हैं वे सभी मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। मैं इस शोध-प्रबंध को आद्योपान्त पढ़कर ही यह प्रमाण पत्र दे रहा हूँ। मैं यह भी प्रमाणित करता हूँ कि यह लघु-प्रबंध इस के पूर्व किसी भी उपाधि के हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया हैं।

निर्देशक

प्राचार्य डॉ. बी. बी. पाटील,

एम. ए., पी-एच. डी.

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर।

कोल्हापूर।

दिनांक ३० : ११ : १९८८।

:- भूमिका -:

'इलाचन्द्र जोशी जी के उपन्यासों में पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन' यह लघु - प्रबंध आपके अवलोकनार्थ प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है । इलाचन्द्र जोशी जी हिंदी साहित्य के प्रतिभावान् सजग साहित्यकार हैं । कथाकार के रूप में विशेषत: उपन्यासकार के रूप में आपने हिंदी साहित्य का खूब गौरव बढाया है । आप के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक ढंग व्यक्त हुआ है । आप तो मानव आन्तरिक जगत् के सफल चितेरे हैं । आपके उपन्यासों के स्त्री-पुरुष पात्र समाज के सामान्य धरकों से होकर भी जीवन के प्रतिकुल घात-प्रतिघातों से जुझाते-जुझाते आगे बढते हैं और यथार्थ जीवन प्रस्तुत करते हैं । आपने व्यक्ति के साथ सामाजिकता की भावना को भी समान स्थान देने का प्रयत्न किया है ।

यह लघु-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय में उपन्यासकार इलाचन्द्र जी की संक्षिप्त जीवनी और उनका व्यक्तित्व प्रस्तुत किया है, जिस में जन्म, शिक्षा, साहित्य साधना की प्रेरणा, कार्यक्षेत्र, और पारिवारिक जीवन आदि के बारे में विवरण है ।

द्वितीय अध्याय में जोशी जी के समय की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति का विवेचन है ।

तृतीय अध्याय में इलाचन्द्र जोशी जी के नौ उपन्यासों में वर्णित पुरुष-पात्रों का मनोविश्लेषण किया गया है ।

चतुर्थ अध्याय में स्त्री-पात्रों का मनोविश्लेषण स्पष्ट किया है ।

पंचम अध्याय में उपसंहार तथा परिशिष्ट में संदर्भ और ग्रंथ सूची दी है ।

इस लघु-प्रबंध लेखन में मेरे निर्देशक श्रध्देय प्राचार्य डॉ.बी.बी.पाटील जी से मुझे समय समय पर बहुमूल्य मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा । समय - समय पर दिए गए उनके स्नेहशील मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के कारण ही मैं यह लघु-प्रबंध पूरा कर सका । उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए मेरे पास शब्द ही नहीं हैं ।

यह लघु-प्रबंध पूरा करने के लिए श्रीराम ज्यूनियर कॉलेज कुडित्रे के प्राचार्य डी.डी. आसगांवकर और स.ब.खाडे महाविद्यालय के प्राचार्य पुंगावकर जी भी मुझे प्रोत्साहन और सहयोग देते रहें, जिनका मैं सहृदय से आभारी हूँ ।

इन के अतिरिक्त मेरे सहपाठी मित्र प्रा.कुरंदवाडे जी (सांगोला) से भी मुझे सहायता मिलती रही । अत: मैं उनके प्रति भी आभारी हूँ ।

महावीर महाविद्यालय, शिवाजी विश्वविद्यालय,राजाराम महाविद्यालय और न्यू कॉलेज के ग्रंथालयों से समय समय पर मुझे ग्रंथों की सहायता मिलती रही । अत: मैं यहाँ के ग्रंथपालों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ ।

इस लघु-प्रबंध को बहुत ही कम समय में टंकलिखित करने का काम श्री बालकृष्ण रा.सावन्त,कोल्हापूर जी ने किया हैं, अगर वे कम समय में टंकलेखन का काम न कर पाते तो मैं यह प्रबंध समय पर प्रस्तुत न कर पाता । अत: उनका भी आभारी हूँ ।

इलाचन्द्र जोशी जी के उपन्यासों के माध्यम से साहित्यकाश में विचरण करने का प्रयास तो मैंने किया हैं । इसमें स्त्री-पुरुषा पात्रों का मनोविश्लेषाण स्पष्ट करने की चेष्टा की हैं, परंतु इस में कुछ त्रुटियाँ रहने की संभावना हैं । इन त्रुटियों को स्वीकार करते हुअे ,मैं यह लघु-शोध प्रबंध आप के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ । इस में कुछ टंकन त्रुटियों की भी संभावना हैं, इन त्रुटियों का यथा समय

निराकरण करने का प्रयत्न तो मैंने किया है फिरभी कुछ त्रुटियाँ रहने की संभावना है । अत: मैं उन त्रुटियों के लिए क्षमा चाहता हूँ ।

कोल्हापूर । प्रा.बारदेस्कर एम.एस.

दिनांक ३०-११-१९८८ ।

••